विशद
सम्यक् ज्ञान विधान
माण्डला

aM{`Vm -प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद सम्यक् ज्ञान विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण - प्रथम-2014 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

मूल्य - 21/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य : -

श्री दिनेश जैन

231, एजव्यर रोड, लन्दन NW 9. 6 LU
0044-208-2057587 (USA)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

''विशाल हृदय से श्रुत की आराधना करने से ही होगा आत्मकल्याण''

जिनवाणी अर्थात् दिव्यध्वनि तीन लोक ऊर्ध्व, अधो-मध्यलोकवर्ती समस्त जीव समूह को निर्बाध विशुद्ध आत्म तत्त्व को उपलब्धि का उपाय करने वाली होने से हितकर है, परमार्थ रसिक जनों के मन को हरने वाली होने से मधुर है, समस्त शंकादि दोषों के स्थान को दूरकर देने से विशद है।

जिनेन्द्र भगवान की जो समुद्र के शब्द समान गम्भीर दिव्य ध्वनि खिरती है। यही वास्तव में जिनवाणी की सर्वोत्कृष्टता है। इसे ही गणधरदेव बारह अंगों में ग्रंथित करते हैं। उसमें यह अतिशय है कि समुद्र शब्द के समान निरक्षरी होकर भी श्रोताजनों को अपनी-अपनी भाषास्वरूप प्रतीत होती है। जो मनुष्य अपने कानों से जिनवाणी का श्रवण करते हैं, उनके कान सफल हैं। जिनवाणी के श्रवण से भव्यों को अविनश्वर सुख की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य जिनवाणी को न सुनकर विषय भोग में प्रवृत्त होते हैं, वे असह्य दुःखों को भोगते हैं। लोगों के चित्त में जो अज्ञान रूपी अंधकार स्थित है, उस अंधकार को सूर्य, चन्द्रमा नष्ट नहीं कर सकते, किन्तु जिनवाणी उस अंधकार को नष्ट कर सकती है। अतः जिनवाणी उत्तम ज्योति है। जिनवाणी के प्रभाव से स्व-पर का भेदज्ञान हो जाने से मोक्षपद की प्राप्ति हो जाती है।

फिर जिनवाणी की उपासना से लौकिक वैभव भोगोपभोग की सामग्री शिक्षा के क्षेत्र में सफलता आदि मिलना तो सरल है।

विद्याध्ययन करने वाले बालक-बालिकाओं के लिए श्रुतज्ञान व्रत पूजा विधान व जाप्य को यहाँ इस पुस्तक में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्या अध्ययन में जिनकी बुद्धि कमजोर है, मन पढ़ाई में नहीं लगता या

अच्छे नम्बरों से पास नहीं हो पाते तो पढ़ाई में विशेष सफलता प्राप्त करने के लिए श्रुत की आराधना स्वरूप यह विधान अवश्य करें।

जिन श्रावक-श्राविकाओं को श्रुत की आराधना कर क्रमशः केवलज्ञान और मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होना है उन्हें श्रुत ज्ञान के व्रत उपवास भी करने चाहिए। यहाँ श्रुत ज्ञान व्रत की विधि व जाप्य दिया जा रहा है। यथाशक्ति अल्पाहार, एकाशन या उपवास कर इस व्रत को पूर्ण करना चाहिए।

श्रुत ज्ञान व्रत में सोलह प्रतिपदाओं के 16 उपवास, तीन तृतीयाओं के 3, चार चतुर्थी के 4, पाँच पंचमी के 5, छह षष्ठी के 6, सात सप्तमी के 7, आठ अष्टमी के 8, नौ नवमी के 9, बीस दशमी के 20, ग्यारह एकादशी के ग्यारह बारह द्वादशी के 12, तेरह त्रयोदशी के 13, चौदह चतुर्दशी के 14, पन्द्रह पूर्णमासी के 15 एवं पन्द्रह अमावस्या के 15 उपवास किये जाते हैं।

यथा- 16+3+4+5+6+7+8+9+20+11+12+13+14+15+15=158

इस प्रकार श्रुतज्ञान व्रत के 158 उपवास होते हैं। शक्ति अनुसार एकाशन या अल्पाहार द्वारा भी आप यह व्रत सम्पन्न कर सकते हैं। उपरोक्त तिथि के क्रम से या सुविधानुसार भी आप 158 व्रत कर सकते हैं।

व्रत में जाप्य अवश्य करना चाहिए। प्रतिदिन भगवान का अभिषेक कर श्रुतज्ञान की पूजा करें। उद्यापन पर परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित यह सम्यक् ज्ञान विधान भारी उत्साह के साथ करना चाहिए।

संकलन - मुनि विशालसागर

(संघस्थ)

मतिज्ञान के 28 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं मानस–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं मानस–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं मानस–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं मानस–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–ईहा–मतिज्ञानाय नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–अवाय–मतिज्ञानाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–धारणा–मतिज्ञानाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः।

11 अंगरूप श्रुतज्ञान के 11 मंत्र

29. ॐ ह्रीं अर्हं आचारांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रकृतांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं स्थानांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं समवायांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं व्याख्याप्रज्ञप्ति–अंग–श्रुतज्ञानाय नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञातृधर्मकथांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं उपासकाध्ययन–अंग–श्रुतज्ञानाय नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृत्–दशांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरौपपादिक–दशांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नव्याकरणांग–श्रुतज्ञानाय नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं विपाकसूत्रांग–श्रुतज्ञानाय नमः।

परिकर्म के 2 भेद के 2 मंत्र

40. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिवादप्रथम–अवयवपरिकर्मणे नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं परिकर्म–अंतर्गत–चंद्रप्रज्ञप्ति–जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिद्वीपसागरप्रज्ञप्ति–व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम–पंचविध–परिकर्म–श्रुतज्ञानेभ्यो नमः।

सूत्र के 88 भेद के 88 मंत्र

42. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापकर्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापफलभोक्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगतत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं चेतनत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं अशब्दप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
49. ॐ ह्रीं अर्हं अगंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
50. ॐ ह्रीं अर्हं अरूपत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
51. ॐ ह्रीं अर्हं अस्पर्शत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
52. ॐ ह्रीं अर्हं अरसत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अर्हं जीवहेतुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
54. ॐ ह्रीं अर्हं स्वीकृतदेहप्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
55. ॐ ह्रीं अर्हं असंसारत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।

56. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
57. ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वगतिशीलत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अर्हं पारिणामिकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
59. ॐ ह्रीं अर्हं बहिरात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
60. ॐ ह्रीं अर्हं अंतरात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
61. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
62. ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
63. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिरूपत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
64. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगधर्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
65. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
66. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैरूप्यधर्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
67. ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
68. ॐ ह्रीं अर्हं जीवनास्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
69. ॐ ह्रीं अर्हं जीवैकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
70. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
71. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानित्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
72. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानित्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
73. ॐ ह्रीं अर्हं वाच्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
74. ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
75. ॐ ह्रीं अर्हं हेतुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
76. ॐ ह्रीं अर्हं अहेतुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
77. ॐ ह्रीं अर्हं कार्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
78. ॐ ह्रीं अर्हं अकार्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
79. ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
80. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्तुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
81. ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
82. ॐ ह्रीं अर्हं अद्रव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
83. ॐ ह्रीं अर्हं बंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
84. ॐ ह्रीं अर्हं अबंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
85. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
86. ॐ ह्रीं अर्हं अमुक्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।

विशद सम्यक् ज्ञान विधान

87. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
88. ॐ ह्रीं अर्हं अभव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
89. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
90. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
91. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
92. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
93. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमातृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
94. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमातृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
95. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमितित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
96. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमितित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
97. ॐ ह्रीं अर्हं कर्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
98. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
99. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
100. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्मत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
101. ॐ ह्रीं अर्हं करणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
102. ॐ ह्रीं अर्हं अकरणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
103. ॐ ह्रीं अर्हं संप्रदानत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
104. ॐ ह्रीं अर्हं असंप्रदानत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
105. ॐ ह्रीं अर्हं अपादानत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
106. ॐ ह्रीं अर्हं अनपादानप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
107. ॐ ह्रीं अर्हं संबंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
108. ॐ ह्रीं अर्हं असंबंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
109. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकरणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
110. ॐ ह्रीं अर्हं अनधिकरणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
111. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियात्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
112. ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियात्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
113. ॐ ह्रीं अर्हं विशेषणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
114. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेषणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
115. ॐ ह्रीं अर्हं विशेष्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
116. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेष्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
117. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्य भावशक्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।

118. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्याभावशक्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
119. ॐ ह्रीं अर्हं भूतकार्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
120. ॐ ह्रीं अर्हं अव्यापकत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
121. ॐ ह्रीं अर्हं व्यापकत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
122. ॐ ह्रीं अर्हं अचेतनत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
123. ॐ ह्रीं अर्हं अंगुष्ठमात्रकत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
124. ॐ ह्रीं अर्हं श्यामकप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
125. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थत्वप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
126. ॐ ह्रीं अर्हं निरन्वय–क्षणिकनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
127. ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैत–एकान्त–निषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
128. ॐ ह्रीं अर्हं असर्वज्ञत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।
129. ॐ ह्रीं अर्हं क्रम–अक्रम–अनेकांतप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः।

प्रथमानुयोग का 1 मंत्र

130. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोग–श्रुतज्ञानाय नमः।

चौदह पूर्व के 14 मंत्र

131. ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
132. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रायणीयपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
133. ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यानुप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
134. ॐ ह्रीं अर्हं अस्ति–नास्तिप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
135. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
136. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
137. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
138. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
139. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
140. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानुवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
141. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणानुप्रवादपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
142. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणावायपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
143. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियाविशालपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।
144. ॐ ह्रीं अर्हं लोकविंदुसारपूर्व–श्रुतज्ञानाय नमः।

पाँच चूलिका के 5 मंत्र

145. ॐ ह्रीं अर्हं जलगताचूलिका–श्रुतज्ञानाय नमः।
146. ॐ ह्रीं अर्हं स्थलगताचूलिका–श्रुतज्ञानाय नमः।
147. ॐ ह्रीं अर्हं मायागताचूलिका–श्रुतज्ञानाय नमः।
148. ॐ ह्रीं अर्हं रूपगताचूलिका–श्रुतज्ञानाय नमः।
149. ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगताचूलिका–श्रुतज्ञानाय नमः।

अवधिज्ञान के 6 मंत्र

150. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान–अवधिज्ञानाय नमः।
151. ॐ ह्रीं अर्हं हीयमान–अवधिज्ञानाय नमः।
152. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्थित–अवधिज्ञानाय नमः।
153. ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थित–अवधिज्ञानाय नमः।
154. ॐ ह्रीं अर्हं अनुगामि–अवधिज्ञानाय नमः।
155. ॐ ह्रीं अर्हं अननुगामि–अवधिज्ञानाय नमः।

मनःपर्ययज्ञान के 2 मंत्र

156. ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।
157. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।

केवलज्ञान का 1 मंत्र

158. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

पाँच ज्ञानों के पृथक्–पृथक् मंत्र

159. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशतिमतिज्ञानेभ्यो नमः।
160. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधपरिकर्मभ्यो नमः।
161. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिसूत्रेभ्यो नमः।
162. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोगाय नमः।
163. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्यो नमः।
164. ॐ ह्रीं अर्हं पंचचूलिकाभ्यो नमः।
165. ॐ ह्रीं अर्हं षड्विध अवधिज्ञानेभ्यो नमः।
166. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविध मनःपर्ययज्ञानेभ्यो नमः।
167. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

श्रुतज्ञान व्रत विधान पूजा

स्थापना

लोकालोक प्रकाशित करता, जीवों को भाई श्रुत ज्ञान।
जिसके द्वारा जग के प्राणी, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।।
द्वादशांग में रहा विभाजित, अतिशयकारी महिमावान।
श्रुतज्ञान को प्राप्त करें हम, अतः हृदय करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वती देवी ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

भव-भव में जल पिया है, लेकिन तृषा शांत ना हो पाई।
श्री जिनवाणी को सुनकर के, निज की सुधि मन में आई।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

धन दौलत की है चाह, जो भव-भव भ्रमण कराती है।
अर्पित करने से चन्दन शीतल, शीतलता निज में आती है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व.स्वाहा।

अज्ञान तिमिर ने प्राणी को, इस भव वन में भटकाया है।
अक्षत से पूजा की जिसने, उसने अक्षय पद पाया है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

जिनवर जिनवाणी की पूजा, तन-मन को निर्मल करती है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने से, अन्तर का कालुष हरती है।।

श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

तृष्णा के हम दास बने हैं, संग्रह व्रती ना छोड़ी है।
निज क्षुधा मिटाने को हमने, संसार की माया जोड़ी है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्गती में मन भरमाया, छाया मोह अंधेरा है।
सम्यक् ज्ञान का दीप जला, करना अब नया सवेरा है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अष्ट कर्म का खेल निराला, सबको खेल खिलाता है।
सम्यक् तप करने वाला ही, कर्म निर्जरा पाता है।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धालय में वास करें हम, मन में भाव जगाए हैं।
शिवफल पाने को फल उत्तम, हमने यहाँ चढ़ाए हैं।।
श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्रव्यों का अर्घ्य बनाकर, चरणों आज चढ़ाते हैं।
शुद्धातम में रम जाएँ हम, यही भावना भाते हैं।।

श्रुत ज्ञान को पाकर हे जिन !, निज आतम का ज्ञान मिले।
प्राप्त नहीं कर पाए आज तक, मेरा वह उपमान खिले ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, पाने शांति विशेष।
शिवपद के राही बनें, धार दिगम्बर भेष।।

(शांतये शांतिधारा)

पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, अर्पण करते आज।
सम्यक् ज्ञान प्रकाश में, सफल होय मम् काज।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- श्रुत ज्ञान को प्राप्त कर, होता ज्ञान प्रकाश।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, पाएँ शिवपुर वास।।

(चाल छन्द)

तीर्थंकर केवलज्ञानी, हों वीतराग विज्ञानी।
जो दिव्य ध्वनि सुनाए, प्राणी सद्ज्ञान जगाए।।
शुभ ॐकारमय गाई, सब भाषामय बतलाई।
जो गणधर झेले जानो, जन-जन हितकारी मानो ।।1।।
पञ्चेन्द्रिय मन से भाई, मतिज्ञान होय सुखदायी।
अवग्रह ईहा शुभ जानो, अवाय धारणा मानो।।
बहु बहु विध क्षिप्र बताए, अनिःस्रित अनुक्त ध्रुव गाए।
विपरीत भेद छह जानो, बारह पदार्थ सब मानो ।।2।।
जो व्यंजन अर्थमय गाये, सब तीन सौ छत्तीस पाए।
मतिज्ञान पूर्वक भाई, हो श्रुतज्ञान सुखदायी।।
शुभ ग्यारह अंग बताए, जिनकी महिमा जग गाए।
परिकर्म भेद दो गाये, प्रज्ञप्ति रूप बताए ।।3।।

है सूत्र की महिमा न्यारी, जग जन मन मंगलकारी।
प्रथमानुयोग में भाई, पुण्य पुरुष की महिमा गाई।।
पूरब चौदश शुभ जानो, पन भेद चूलिका मानो।
छह अवधिज्ञान शुभ गाए, दो मनःपर्यय बतलाए ।।4।।
शुभ केवलज्ञान कहाए, सब ज्ञान पाँच कहलाए।
हम केवलज्ञान जगाएँ, यह विशद भावना भाए।।

दोहा

मेरी है यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक् श्रुत को प्राप्त कर, पाएँ पञ्चम ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल विनिर्गत द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- सम्यक् श्रुत को प्राप्त कर, पाए केवलज्ञान।
यही भावना है विशद, शीघ्र होय निर्वाण।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली *(दोहा)*

सम्यक् ज्ञान के अर्घ्य हम, करते हैं प्रारम्भ।
भक्ती करते भाव से, छोड़ मान छल दम्भ।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चौपाई)

मन से होय अवग्रह भाई, मति ज्ञान की यह प्रभुताई।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से ईहा ज्ञान जगाते, श्रुत ज्ञान फिर प्राणी पाते।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानस-ईहा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से ज्ञान अवाय जगाएँ, भेद ज्ञान श्रुत से हम पाएँ।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवाय-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से जीव धारणा पावें, वस्तु तत्त्व का ज्ञान जगावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानस-धारणा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवग्रह स्पर्शन से पावें, श्रुत के द्वारा ज्ञान बढ़ावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन से ईहा ज्ञानी, हो जाते हैं ज्ञानी ध्यानी।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अवाय स्पर्शन द्वारा, श्रुत ज्ञान का बने सहारा।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शनज धारणा पावें, श्रुत ज्ञान पाके हर्षावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवग्रह रसनज जो प्रगटावें, श्रुत ज्ञान फिर जीव जगावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनज ईहा पावें ज्ञानी, श्रुत ज्ञान मय हो कल्याणी।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय अवाय रसनज शुभकारी, श्रुत ज्ञान जागे मनहारी।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय धारणा रसनज भाई, जो है सम्यक् ज्ञान प्रदायी।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवग्रह होय घ्राण से जानो, श्रुत ज्ञान का कारण मानो।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईहा घ्राणज जो प्रगटावें, वे नर श्रुत ज्ञान प्रगटावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अवाय घ्राणज शुभ भाई, पावें श्रुत ज्ञानी सुखदायी।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणज श्रेष्ठ धारणा पावें, श्रुत ज्ञान हम भी प्रगटावें।
हम भी सम्यक् ज्ञान जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपद पाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द मोतिया दाम)

चाक्षुष अवग्रह हो मतिज्ञान, जीव पाते हैं फिर श्रुत ज्ञान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाक्षुष ईहा शुभ मतिज्ञान, प्राप्त हो श्रुत से केवलज्ञान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-ईहा-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाक्षुष पाएँ ज्ञान अवाय, प्राप्त सम्यक् अब हो जाय।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवाय-मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाक्षुष होय धारणा ज्ञान, जगाएँ वीतराग विज्ञान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष–धारणा–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ण से होय अवग्रह ज्ञान, जगाएँ वीतराग विज्ञान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।21 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–अवग्रह–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय श्रोत्रज अब ईहा ज्ञान, ज्ञान में रुचि जागे भगवान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।22 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–ईहा–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ण से पाएँ ज्ञान अवाय, ज्ञान श्रुत पाएँ मोक्ष प्रदाय।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।23 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–अवाय–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ण से होय धारणा ज्ञान, करें हम निज आतम का भान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।24 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज–धारणा–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन इन्द्रिय व्यंजन जान, अवग्रह मतिज्ञान हो मान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।25 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय व्यंजनावग्रह पाय, श्रेष्ठ मति से श्रुत प्रगटाय।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।26 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह जान, प्रकट मति से होवे श्रुतज्ञान।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।27 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोतेन्द्रिय व्यंजनावग्रह पाय, प्रकट मतिज्ञान से श्रुत हो जाय।
प्राप्त करके सम्यक् श्रुतज्ञान, मिले हमको पद प्रभु निर्वाण ।।28 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रेन्द्रिय–व्यंजनावग्रह–मतिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11 अंगरूप श्रुतज्ञान के 11 मंत्र

शुभ आचार्य शास्त्र का वर्णन, जिसमें किया गया पावन।
पद अष्टादश सहस प्रमाणी, आचारांग है मन भावन।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार ।।29 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं आचारांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व–पर समय की चर्चा अध्ययन, विनय धर्म की क्रिया प्रधान।
पद छत्तीस हजार प्रमाणी, सूत्र कृतांग है आगम जान।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार ।।30 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रकृतांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य तत्त्व के भेद कहे हैं, एकादिक सब ही स्थान।
पद हैं ब्यालिस सहस्त्र प्रमाणी, स्थानांग भी रहा महान्।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार ।।31 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थानांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल अपेक्षा, भाव अपेक्षा रहा समान।
इक लख चौंसठ सहस सुपद युत, समवायांग कहे भगवान।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार ।।32 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं समवायांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव नित्य है औ अनित्य भी, साठ सहस प्रश्नोत्तर वान।
सहस अट्ठाइस सुपद लाख दो, व्याख्या प्रज्ञप्ती रहा महान्।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार ।।33 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर की ध्वनी बताए, तीर्थंकर का धर्म कथन।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, ज्ञातृ धर्म कथांग वन्दन।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञातृधर्मकथांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक की प्रतिमा आवश्यक, का जिसमें सुन्दर वर्णन।
ग्यारह लाख सहस सत्तर पद, उपाशकाध्ययन को वन्दन।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपासकाध्ययन–अंग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के काल में मुनि दश, शिव पाने उपसर्ग सहे।
तेइस लाख अठबीस सहस पद, अन्तःकृद् दशांग कहे।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृत्–दशांग अंग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश मुनिवर प्रत्येक तीर्थ में, समता धर उपसर्ग सहे।
लाख बानवे सहस चवालिस, अनुत्तरोपादिक सुपद कहे।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरौपपादिक–दशांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कथाएँ लाभ–हानि का, किया गया जिसमें वर्णन।
लाख तिरानवे सोलह हजार पद, प्रश्न व्याकरण करे कथन।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नव्याकरणांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीव्र मंद भावनानुसार जो, द्रव्य क्षेत्रादिक का वर्णन।
लाख चौरासी एक कोटि पद, विपाक सूत्र में किया कथन।।
शिवपथ राह दिखाने वाला, कहा गया जो मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिसको हम भी बारम्बार।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपाकसूत्रांग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिकर्म के 2 भेद के 2 अर्घ

द्वादशांग जिनवाणी पावन, दृष्टिवाद है अंग महान।
है परिकर्म प्रथम अवयव शुभ, जिसका हम करते गुणगान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिनका नत हो बारम्बार।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिवादप्रथम–अवयवपरिकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सूर्य अरु जम्बूद्वीप शुभ, दीप सागर प्रज्ञप्ति महान।
व्याख्या प्रज्ञप्ती युत गाये, सब परिकर्म के भेद प्रधान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिनका नत हो बारम्बार।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिकर्म–अंतर्गत–चंद्रप्रज्ञप्ति–सूर्यप्रज्ञप्ति–जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिद्वीपसागरप्रज्ञप्ति–व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम–पंचविध–परिकर्म–श्रुतज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र के 88 भेद के 88 मंत्र

पुण्य पाप कर्तृत्व प्रकाशक, रहा सूत्र श्रुतज्ञान प्रधान।
जिसके फल से जग के प्राणी, भटक रहे ये सर्व जहान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापकर्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप फल के भोक्ता का, सूत्र सुश्रुत से होय प्रकाश।
भ्रमण होय चारों गतियों में, जीव रहा कर्मों का दास।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापफलभोक्तृत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गतत्त्व प्रकाशक गाया, पावन परम सूत्र श्रुतज्ञान।
जिसको ध्याने वाला पाए, अनुक्रम से फिर केवलज्ञान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगततत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा प्रकाशक चेतनत्व का, श्रुत ज्ञान है सूत्र विशेष।
श्रुत के धारी संयम पाते, धारण करें दिगम्बर भेष।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं चेतनत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अमूर्त्तत्व प्रकाशक आगम, श्रुतज्ञान शुभ सूत्र महान।
जिसको पाने वाले ज्ञानी, प्राप्त करें शुभ पद निर्वाण।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्त्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मूर्तत्त्व प्रकाशक वाणी, श्री जिनेन्द्र की सूत्र प्रधान।
भाव सहित जो हृदय बसाए, उसका होय शीघ्र कल्याण।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूर्त्तत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशब्दत्त्व का रहा प्रकाशक, सूत्रागम जग मंगलकार।
तीन योग से ध्याने वाला, ज्ञान जगाए अपरम्पार।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशब्दत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगन्धत्व का होय प्रकाशन, जिन सूत्रों से महति महान।
हृदय सजाए जिन सूत्रों को, वह पा जाए सम्यक् ज्ञान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरूपत्व का करे प्रकाशन, जैनागम यह सूत्र प्रधान।
सम्यक्ज्ञान जगाने वाला, प्राणी होता महिमावान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरूपत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्पर्शत्व प्रकाश सूत्र से, होता है यह कहे जिनेश।
नित्य निरन्तर चिन्तन द्वारा, ज्ञानी हो यह जीव विशेष।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं अस्पर्शत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अरसत्व प्रकाशक अनुपम, जिनवाणी के सूत्र त्रिकाल।
जीव क्षयोपशम पाए ज्ञान का, जो गाए श्रुत की गुणमाल।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरसत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव हेतुत्व प्रकाशक वाणी, श्री जिनेन्द्र की मंगलकार।
सूत्ररूप में जो भी ध्याए, वह हो जाए भव से पार।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवहेतुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वीकृत देह प्रमाण प्रकाशक, सूत्र बताए महिमावान।
ज्ञानी होते हैं वह प्राणी, भाव सहित जो करते ध्यान।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, तीन लोक में अपरम्पार।
वन्दन करते भक्ति भाव से, जिसकी नत हो बारम्बार।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वीकृतदेहप्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छंद)

असंसारत्व प्रकाशक सूत्र, कहे जैनागम के शुभकार।
सजाए हृदय कमल में जीव, शीघ्र हो उसका बेड़ा पार।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंसारत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र सिद्धत्व प्रकाशक जान, जिन्हें पाकर हो सम्यक् ज्ञान।
हृदय में धारे भाव समेत, शीघ्र उसका भी हो कल्याण।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व गतिशील प्रकाशक सूत्र, बताए हैं यह जिन भगवान।
करें जो प्राणी श्रुत अभ्यास, शीघ्र बन जाते वह विद्वान।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वगतिशीलत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र पारिणामिकत्व प्रकाश, बताए जगतीपति जगदीश।
करे हृदयांगम जो भी जीव, बनें वे मुक्तीपद के ईश।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिणामिकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे बहिरात्म प्रकाशक सूत्र, जगत में क्या–क्या होता हेय।
ज्ञान करते सूत्रों से संत, रहा जीवन में क्या उपादेय।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहिरात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक अंतरात्म के सूत्र, भाव से जो भी ध्यान लगाय।
कर्म की करें निर्जरा तीव्र, जीव वह शीघ्र मोक्ष को जाय।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंतरात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र परमात्म प्रकाशक खास, हृदय में ऐसी श्रद्धा धार।
हृदय से ध्याये जो जग जीव, शीघ्र हो उसका बेड़ा पार।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक पञ्च ब्रह्ममय सूत्र, कराते आत्म ब्रह्म का ज्ञान।
दमन कर पञ्चेन्द्रिय का जीव, करें निज आतम का कल्याण।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति रूपत्व प्रकाशक सूत्र, लोक में गाये महति महान।
रही महिमा बहु अपरम्पार, ज्ञान सम्यक् के रहे निधान।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिरूपत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक हैं उपयोग सुधर्म, सूत्र की महिमा अगम अपार।
उतारें जो निज उर में ज्ञान, शीघ्र हो जाते भव से पार।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगधर्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक हैं उपयोगित्व सूत्र, जीव उर में धारें गुणवान।
धारकर रत्नत्रय शुभ धर्म, प्राप्त करते हैं पद निर्वाण।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक धर्म त्रैरूप महान, सूत्र कहलाए जगत् प्रसिद्ध।
करें जो पठन श्रवण जग जीव, बनें वे कर्म नाशकर सिद्ध।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रैरूप्यधर्मप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकाशक जीवास्तिकाय शुभ सूत्र, रहे इस जग में मंगलकार।
प्राप्त करते हैं ज्ञानी जीव, बनें निज पर के तारण हार।।
सूत्र की महिमा अगम अपार, हृदय में धारे जो जग जीव।
मोक्ष का कारण रहा महान, प्राप्त वह करते पुण्य अतीव।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

नास्तित्व प्रकाशक जीव, सूत्र पावन कहलाए।
चिन्तन मन्थन द्वारा, प्राणी ज्ञान जगाए।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवनास्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व प्रकाशक जीव, सूत्र आगम में गाए।
पाए वह भी मोक्ष, सम्यक् श्रुत जो पाए।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकत्व प्रकाशक जीव, सूत्र गाए शुभकारी।
सम्यक् श्रुत प्रगटाय, हो शिव का अधिकारी।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यत्त्व प्रकाशक जीव, सूत्रधर जो हैं ज्ञानी।
बनें श्री के नाथ, वे नर केवलज्ञानी।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवनित्यत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनितत्त्व प्रकाशक जीव, सूत्र पावन बतलाए।
ज्ञानी होते जीव, श्रुत की महिमा गाए।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवानित्यत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाच्यत्व प्रकाशक श्रेष्ठ, सूत्र शुभ रहे निराले।
मोह महातम जीव, का जो हरने वाले।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाच्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवाच्यत्त्व प्रकाशक जीव, सूत्र है जग में पावन।
शिवमग करे प्रकाश, श्रेष्ठ जो हैं मनभावन।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेतुत्त्व प्रकाशक पाके, ज्ञान सूत्र पाते प्राणी।
सम्यक् श्रुत को प्राप्त, होते सम्यक् ज्ञानी।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेतुत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहेतुत्त्व प्रकाशक सूत्र, भवतम हरने वाले।
ज्ञानी होते जीव, भव सर तरने वाले।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहेतुत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्यत्त्व प्रकाशक सूत्र, की महिमा जग गाए।
पाए ज्ञान प्रकाशक, शिव नगरी को जाए।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्यत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकार्यत्त्व प्रकाशक सूत्र, गाए हैं मनहारी।
महिमा का ना पार, श्रुत जग मंगलकारी।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकार्यत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुत्व प्रकाशक सूत्र, को जो ध्याते प्राणी।
अल्प समय में वे, पा लेते शिव रजधानी।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवस्तुत्व प्रकाशक सूत्र, को जो ध्याते भाई।
तीन लोक के जीव, वह पाते प्रभुताई।।
पाने सम्यक् ज्ञान, सूत्र हम उर से ध्यायें।
विशद भाव के साथ, हम श्रुत पूज रचाएँ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवस्तुत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

द्रव्यत्व प्रकाशक भाई, है सूत्र श्रेष्ठ सुखदायी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्रव्यत्व प्रकाशक जानो, जिन सूत्र कहे यह मानो।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्रव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धत्त्व प्रकाशक गाए, जिन सूत्र श्रेष्ठ बतलाए।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अबन्धत्त्व प्रकाशक प्राणी, जिनसूत्र रहे कल्याणी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं अबंधत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तत्व प्रकाशक सोहे, जिनसूत्र सुमन को मोहें।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमुक्तत्त्व प्रकाशक भाई, जिनसूत्र कहे सुखदायी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमुक्तत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भव्यत्व प्रकाशक जानो, जिनसूत्र रहे यह मानो।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं भव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अभव्यत्व प्रकाशक गाए, जिनसूत्र श्रेष्ठ कहलाए।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभव्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रमेयत्व प्रकाशक जानो, जिनसूत्रों को पहिचानो।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अप्रमेयत्व प्रकाशक भाई, हैं सूत्र श्रेष्ठ सुखदायी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रमाणत्व प्रकाशक ज्ञानी, हैं सूत्र श्रेष्ठ सुखदानी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अप्रमाणत्व रहे प्रकाशी, जिन सूत्र श्रेष्ठ सुखराशी।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमाणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रमातृत्त्व प्रकाशक गाये, जिनसूत्र श्रेष्ठ कहलाए।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमातृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अप्रमातृत्त्व प्रकाशी जानो, हैं सूत्र श्रेष्ठ पहिचानो।
हम श्रुत को पूज रचाएँ, श्रुत पा शिव पदवी पाएँ।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमातृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जैनागम के सूत्र शुभ, करते प्रमित प्रकाश।
ज्ञान ध्यान तप लीन हो, पावें ज्ञान विकाश।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमितित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अप्रमित प्रकाशक सूत्र हैं, महिमामयी महान।
ध्याने वाले शीघ्र ही, पाते पद निर्वाण।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमितित्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्तत्त्व प्रकाशक जानिए, सूत्र परम शुभकार।
जिनको ध्याये जीव जो, पाएँ भव से पार।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्तृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकर्तृत्त्व प्रकाशक रहे, जग में महति महान।
जिनसूत्रों का हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं अकर्तृत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते हैं कर्मत्त्व का, जिनश्रुत सूत्र प्रकाश।
उनको ध्याए भाव से, होती पूरी आश।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जैनागम के सूत्र से, हो अकर्मत्त्व प्रकाश।
अनुक्रम से जग जीव का, होता सदा विकाश।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं अकर्मत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करणत्त्व प्रकाशक सूत्र हैं, जग में मंगलकार।
ध्याते हैं जो भाव से, वे पाते भव पार।।101।।
ॐ ह्रीं अर्हं करणत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकरणत्त्व प्रकाशक सूत्र को, ध्याते हैं जो लोग।
अल्प समय में जीव वह, पाते शिव का योग।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं अकरणत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूत्र सम्प्रदानत्त्व का, करते सदा प्रकाश।
ज्ञानी करते कर्म का, अनुक्रम से फिर ह्रास।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्प्रदानत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र असम्प्रदानत्त्व का, करते सतत प्रकाश।
जिनके द्वारा जीव के, होता ज्ञान विकाश।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं असम्प्रदानत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र अपादानत्त्व का, करते विशद प्रकाश।
जिनके द्वारा जीव के, हो कर्मों का नाश।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपादानत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र अनपादानत्त्व का, अतिशय करें प्रकाश।
अनुक्रम से जग जीव का, होता सदा विकाश।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनपादानत्त्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा छंद)

सम्बन्धत्व प्रकाशक पावन, सूत्र कहे भाई।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, होते सुखदायी।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी.. ।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं संबंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असम्बन्धत्व प्रकाशक अनुपम, सूत्र रहे भाई।
जिनको ध्याने वालों ने शुभ, पाई प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी.. ।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंबंधत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिकरणत्व प्रकाशक आगम, पूज्य रहा भाई।
सूत्रों में जिन श्रुत की महिमा, अतिशय बतलाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।109।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिकरणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनधिकरणत्व प्रकाशक अतिशय, सूत्र कहे भाई।
मोक्ष मार्ग में साधक श्रुत को, ध्याओ हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।110।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनधिकरणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रियत्व प्रकाशक सूत्रों की शुभ, महिमा बतलाई।
अल्प समय में ध्याने वालों, ने मुक्ती पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रियात्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्रियत्व प्रकाशक सूत्रों, की है प्रभुताई।
शिवपद पाने की अब मेरी, भी बारी आई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई ।। सभी... ।।112।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियात्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेषणत्व प्रकाशक सूत्रों की महिमा गाई।
जिनको ध्याने वालों ने ही, पाई प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।113।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशेषणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविशेषणत्व प्रकाशक पावन, सूत्र रहे भाई।
उनने शिवपद पाया जिनने, श्रुत महिमा पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।114।।

ॐ ह्रीं अर्हं अविशेषणत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष्यत्व प्रकाशक सूत्रों की शुभ, महिमा बतलाई।
श्रुत को ध्याने वालों ने निज, आतम चमकाई।।

सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।115।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशेष्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविशेष्यत्व प्रकाशक पावन, सूत्र कहे भाई।
ज्ञान जगाने हेतू प्राणी, ध्याओ हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।116।।

ॐ ह्रीं अर्हं अविशेष्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावस्य भाव शक्तित्व प्रकाशक, सूत्र रहे भाई।
शत सूत्रों को ध्याया जिनने, पाई प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।117।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावस्यभावशक्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावस्याभाव शक्तित्व प्रकाशक, महिमामय भाई।
सूत्रों की है महिमा पावन, ध्याओ हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई.....
श्रुत की महिमा तीन लोक में, संतों ने गाई।। सभी... ।।118।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावस्याभावशक्तित्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भूत कार्यत्व प्रकाश, जिन सूत्रों से हो विशद।
होवे पूरी आश, ध्याये जो निज भाव से।।119।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतकार्यत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्यापकत्व निषेध, सूत्र प्रकाशक गाए हैं।
ध्याये जीव विशेष, ज्ञानी हो वह लोक में।।120।।

ॐ ह्रीं अर्हं अव्यापकत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है व्यापकत्व निषेध, सूत्र प्रकाशक श्रेष्ठतम।
कहते वीर जिनेश, ध्याने वाला वीर हो।।121।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यापकत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, अचेतनत्व निषेध का।
होवे सदा विकाश, जीवों को सद्गुणों का।।122।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचेतनत्वनिषेधप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते ज्ञान प्रकाश, अंगुष्ठ मात्रकत्व निषेधत्व का।
होवे पूरी आस, जीवों का कल्याण हो।।123।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंगुष्ठमात्रकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, श्यामक प्रमाण निषेधकत्व का।
होवे पूरी आश, ध्याये जो निज भाव से।।124।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्यामकप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश कूटस्थत्व प्रमाण निषेधकत्व का।
होती पूरी आस, ध्यायें जो जि नश्रुत विशद।।125।।

ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थत्वप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, निरन्वय निषेधकत्व का।
हो शिवपुर में वास, श्रुत को ध्यायें भाव से।।126।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरन्वयक्षणिकनिषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, अद्वैत एकान्त निषेधकत्व का।
हो कर्मों का नाश सम्यक् श्रुत का ध्यान कर।।127।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैत–एकान्त–निषेधकत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, असर्वज्ञत्व का लोक में।
होती पूरी आस, श्रुत का जो चिंतन करें।।128।।

ॐ ह्रीं अर्हं असर्वज्ञत्वप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते सूत्र प्रकाश, कृम अकृम अनेकान्त का।
हो शिवपुर में वास, जो श्रुत को ध्याते सदा।।129।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रम–अक्रम–अनेकांतप्रकाशक–सूत्र–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथमानुयोग का अर्घ्य

जिसमें पुण्य पुरुष की जीवन, चर्या का कीन्हा वर्णन।
महापुरुष के जीवन चारित, का भी जिसमें रहा कथन।।
प्रथमानुयोग शास्त्र है पावन, जिसका हम करते अर्चन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम नत हो वन्दन।।130।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोग–श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूर्व के चौदह अर्घ्य

(चाल छंद)

उत्पाद पूर्व शुभकारी, है तत्त्व प्रकाशनकारी।
जिसका है शौर्य निराला, जग का तम हरने वाला।।131।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूरब भाई, है जीवों को सुखदायी।
जो ज्ञान रश्मि प्रगटाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।132।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रायणीयपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वीर्यानुवाद कहाए, बल वीर्य की शक्ती गाए।
है जग जीवों का त्राता, जिसमें ब्रह्माण्ड समाता।।133।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यानुप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्व–पर चतुष्टय गाये, अस्तिनास्ति प्रवाद कहाए।
इसका जो ज्ञान जगाए, वह स्याद्वादी कहलाए।।134।।

ॐ ह्रीं अर्हं अस्ति–नास्तिप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ज्ञान प्रवाद निराला, जग का तम हरने वाला।
जो जगत् प्रकाशनकारी, महिमा है जिसकी न्यारी।।135।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सत्य प्रवाद को ध्यायें, निज के सत् को प्रगटाएँ।
है सत्य सुधामृत वाणी, हित–मित–प्रिय जग कल्याणी।।136।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आत्म प्रवाद कहाए, ज्ञानी जन के मन भाए।
जिस पर श्रद्धाधर प्राणी, सुनते हैं भवि जिनवाणी।।137।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म का ज्ञान कराए, वह कर्म प्रवाद कहाए।
जो संयम को अपनाए, कर्मों से मुक्ती पाए।।138।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रत्याख्यान प्रवाद कहाया, त्यागादिक जिसमें बतलाया।
उच्च ज्ञान जग को सिखलाए, ऊपर का शुभ मार्ग बताए।।139।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानुवाद पूर्व है भाई, जिसमें विद्या है सुखदायी।
जैनागम को जो भी ध्याये, उसको शिवपद राह दिखाए।।140।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानुवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणावाद पूर्व शुभकारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
शिवपथ पर जो हमें बढ़ाए, भव्य जीव जो आगम ध्याये।।141।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणावायपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया विशाल पूर्व शुभ गाया, जिसमें सद् आचार बताया।
सदाचरण की क्रिया हमारी, शिवपद दायक है मनहारी।।142।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रियाविशालपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकबिन्दु शुभ सार कहाए, तीन लोक का वर्णन गाए।
जो भी श्रवण करें जिनवाणी, बनें जीव को जो कल्याणी।।143।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकबिन्दुसारपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह संचार आदि बतलाए, वह कल्याणवाद कहलाए।
जैनागम को मन से ध्याये, वह प्राणी ज्ञानी बन जाए।।144।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणानुप्रवादपूर्व श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच चूलिका वर्णन (आल्हा छंद)

दृष्टिवाद का भेद है पञ्चम, जिसका रहा चूलिका नाम।
पाँच भेद इसके बतलाए, जिसको श्रावक करें प्रणाम।।
प्रथम भेद जलगता है जिसमें, कहा गया जल का संचार।
ऐसे जैनागम को वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।145।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलगताचूलिका श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तंत्र–मंत्र के द्वारा प्राणी, स्थल में भी करें गमन।
पृथ्वी से सम्बन्धित सारे, विषयों का जो करें कथन।।
स्थलगता वास्तु सम्बन्धी, वर्णन करता है शुभकार।
ऐसे जैनागम को वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।146।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थलगताचूलिका श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रजाल माया मय क्रीड़ा, मंत्र विधी का करे कथन।
अन्य जीव के हितकर कारण, जिनका भी करता वर्णन।।
मायागता शास्त्र माया के, ज्ञान का है अनुपम आधार।
ऐसे जैनागम को वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।147।।

ॐ ह्रीं अर्हं मायागताचूलिका श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह व्याघ्र आदिक रूपों को, मानव स्वयं करे धारण।
इस प्रकार के मंत्र तंत्र, आदिक का है जिसमें वर्णन।।
चित्र काष्ठ आदिक कर्मों का, रूपगता है शुभ आधार
ऐसे जैनागम को वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।148।।

ॐ ह्रीं अर्हं रूपगताचूलिका श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन गमन के साधन जिसमें, ऋद्धि–सिद्धि का है वर्णन।
सम्यक् मंत्र तपस्या आदिक, का भी जिसमें किया कथन।।
है आकाश गता में वर्णन, सब जीवों का भली प्रकार।
ऐसे जैनागम को वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।149।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगताचूलिका श्रुतज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान के 6 अर्घ्य
(वेसरी छंद)

अवधि ज्ञान जो बढ़ता जाय, वर्धमान वह ज्ञान कहाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।150।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान जो घटता जाय, हीयमान वह ज्ञान कहाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।151।।

ॐ ह्रीं अर्हं हीयमान–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घट बढ़ ना स्थिरता पाय, ज्ञान अवस्थित वह कहलाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।152।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवस्थित–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान में घट बढ़ता हो जाय, अनवस्थित वह ज्ञान कहाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।153।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थित–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परभव साथ ज्ञान जो जाय, अनुगामी वह ज्ञान कहाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।154।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुगामि–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परभव ज्ञान साथ ना जाय, अननुगामि वह ज्ञान कहाय।
श्रुत को जो नर पूज रचाय, वह भी नर ज्ञानी हो जाय।।155।।

ॐ ह्रीं अर्हं अननुगामि–अवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्ययज्ञान के 2 अर्घ

पर के मन की सरल बात को, जाने ऋजु मनःपर्यय ज्ञान।
प्रकट करें मुनि ऋद्धिधारी, करें आत्मा का जो ध्यान।।
ज्ञान मनःपर्यय प्रगटाते, परम दिगम्बर जैन ऋशीष।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, झुका रहे हम पद में शीश।।156।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरल कठिन हो बात कोई भी, पर के मन की जाने संत।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, होते हैं निश्चय अरहंत।।
ज्ञान मनःपर्यय प्रगटाते, परम दिगम्बर जैन ऋशीष।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, झुका रहे हम पद में शीश।।157।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान का 1 मंत्र

तीन लोक त्रैकालिक सारे, द्रव्य जानता केवल ज्ञान।
सर्व चराचर का ज्ञाता है, तीन लोक में महति महान।।
केवल ज्ञान प्रकट करते हैं, परम दिगम्बर जैन ऋशीष।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, झुका रहे हम पद में शीश।।158।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच ज्ञानों के नौ अर्घ्य *(पाइता छंद)*

अट्ठाईस भेद शुभ गाये, मतिज्ञान के जो कहलाए।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।159।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशतिमतिज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विविध परिकर्म बताया, श्रुत मंगलकारी गाया।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।160।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधपरिकर्मभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सूत्र अठासी जानो, सद्ज्ञान प्रकाशक मानो।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।161।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिसूत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथमानुयोग शुभकारी, जो है अति महिमाकारी।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।162।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भेद पूर्व के गाए, चौदह अनुपम कहलाए।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।163।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं पंच चूलिका भाई, फैली जग में प्रभुताई।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।164।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचचूलिकाभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अवधिज्ञान मनहारी, छह भेद रूप शुभकारी।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।165।।

ॐ ह्रीं अर्हं षड्विध अवधिज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय ज्ञान बताया, दो भेद रूप शुभ गाया।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।166।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्विविध मनःपर्ययज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान को ध्याये, वह विशद ज्ञान प्रगटाए।
हम पूज रहे श्रुत भाई, जो है जग मंगलदायी।।167।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मति श्रुत अवधि ज्ञान मनः पर्यय, क्षायिक होता केवलज्ञान।
सम्यक् रीति से पठन श्रवण कर, पाते वीतराग विज्ञान।।
रत्नत्रय के धारी बनकर, करके निज आतम का ध्यान।
कर्म नाशकर जग के प्राणी, पा लेते हैं पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री मानसावग्रहादि केवलज्ञानान्त्य-अष्टपंचाशदुत्तरशत प्रमाणज्ञानेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जाप्य- ॐ ह्रीं श्री मानसावग्रहादि केवलज्ञानान्त्य अष्ट पंचाशदुत्तरशत प्रमाण ज्ञानेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- सम्यक् श्रुत शिव मार्ग का, अनुपम है सोपान।
गाते हैं जयमालिका, पाने मोक्ष निधान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

उत्सुक लोकालोक देखने, ज्ञानीजन के नेत्र स्वरूप।
प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष ज्ञान की, स्तुति करता मैं अनुरूपङ्क 1ङ्क
योग्य क्षेत्र के द्रव्य सुनियमित, इन्द्रिय मन से जाने कोय।
बहु अवग्रह आदि तीन सौ, छत्तिस ऋद्धि अनेकों होयङ्क 2ङ्क
कोष्ठ बीज पदानुसारिणी, सभिन्न श्रोतृत्व सहित महान्।
अभिनिबोधिक को मैं बन्दूँ, है श्रुतज्ञान! का हेतु प्रधानङ्क 3ङ्क
जिनवर कथित सुगणधर गूंथित, अंग प्रविष्टी बाह्य स्वरूप।
श्रुतज्ञान को नमन् करूँ मैं, द्वय अनेक भेदों कर रूपङ्क 4ङ्क
पर्यय अक्षर पद संघात अरु , प्रतिपत्ति अनुयोग सुजान।
प्राभृतक-प्राभृतक प्राभृतक, वस्तु पूर्व समास भी मानङ्क 5ङ्क
बीस भेद से व्याप्त श्रेष्ठ शुभ, आगम पद्धति है गम्भीर।
द्वादश भेद युक्त जिनश्रुत को, वन्दूँ मैं धारण कर धीरङ्क 6ङ्क
आचारांग सूत्रकृत पावन, स्थानांग अरु समवायांग।
व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्रकृतांग अरु, सप्तम रहा उपासकाध्यनांगङ्क 7ङ्क
अन्तः कृत दश अनुत्तरोपादिक, दशांग और प्रश्न व्याकरणांग।
विपाक सूत्र अरु दृष्टि वाद को, वन्दूँ मैं झुककर साष्टांगङ्क 8ङ्क
परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग शुभ, श्रेष्ठपूर्वगत अंग महान्।
दृष्टिवाद का भेद चूलिका, पांचों को वन्दूँ धर ध्यानङ्क 9ङ्क
पंच भेद परिकर्म के भाई, चन्द्र सूर्य प्रज्ञप्ती ध्यान।
जम्बूद्वीप अरु दीप सागर, व्याख्या प्रज्ञप्ति रहा महान्ङ्क 10ङ्क
जल स्थल अरु रूपगता शुभ, माया अरु आकाश गता।
दृष्टीवाद चूलिका के शुभ, पञ्च भेद का लगा पताङ्क 11ङ्क
चौदह भेदों युक्त पूर्वगत, प्रथम पूर्व उत्पाद कहा।
है अग्रायणीय द्वितीय शुभ, तृतीय पुरुवीर्यानुवाद रहाङ्क 12ङ्क

अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व अरु, ज्ञान प्रवाद पूर्व शुभ नाम।
सत्य प्रवाद पूर्व है **षष्टम**, आत्म प्रवाद को करूँ प्रणामङ्क 13ङ्क
कर्म प्रवाद का वन्दन करके, प्रत्याख्यान का करूँ कथन।
विद्यानुवाद प्रवाद दशम है, स्तुति करके करूँ नमनङ्क 14ङ्क
कल्याणवाद पूर्व ग्यारहवां, प्राणवाद अरु क्रिया विशाल।
लोक बिन्दु सार चौदहवाँ, श्रुत को वन्दन है नतभालङ्क 15ङ्क
दश चौदह अरु आठ अठारह, बारह बारह सोलह बीस।
तीस पञ्चदश दश-दश क्रमशः, कहीं वस्तुएँ जैन मुनीशङ्क 16ङ्क
प्राभृत बीस बीस जिनवर ने, प्रति वस्तु में बतलाए।
चौदह पूर्वों के भेदों को, वन्दन करने हम आएङ्क 17ङ्क
पूर्वान्त अपरान्त ध्रुवअध्रुव अरु, च्यवन लब्धि है नाम प्रधान।
अध्रुव संप्रणधि अर्थ भौमशुभ, व्रतादि सर्वार्थ कल्पनीय ज्ञानङ्क 18ङ्क
अतीतकाल अरु रहा अनागत, सिद्धि और उपाध्य शुभ नाम।
वस्तुएँ अग्रायणीय पूर्व की, उनको बारम्बार प्रणामङ्क 19ङ्क
पञ्चम वस्तु का चतुर्थ है, कर्म प्रभृति प्राभृत अनुयोग।
चौबीस भेद कहे जिनवर ने, उनका पाएँ शुभ संयोगङ्क 20ङ्क
उसके भेद हैं कृति वेदना, स्पर्शन कर्मप्रकृत्ति अरु बन्ध।
और निबन्धन प्रक्रम अनुपक्रम, अभ्युदय है मोक्ष अबन्धङ्क 21ङ्क
संक्रम लेश्या लेश्याकर्म अरु, लेश्या परिणाम अरु सातासात्।
ह्रस्व और भव धारणीय शुभ, पुद्गलात्म अरु निधत्तानिधत्तङ्क 22ङ्क
निकाचितानिकाचित कर्म स्थिति, पश्चिम स्कन्ध अरु अल्पबहुत्व।
जो हैं द्वार समान प्रवेश को, पा जाऊँ मैं उनका सत्वङ्क 23ङ्क
एक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख सहस पद अट्ठावन।
पाँच अधिक पद द्वादशांग के, उनको है शत्शत् वन्दनङ्क 24ङ्क

सोलह सौ चौतिस कोटि शुभ, लाख तिरासी सात हजार।
शतक आठ सौ और अठासी, पद के अक्षर हैं मनहार।। 25।।
सामायिक चतुर्विंशति स्तव, देव वन्दना प्रतिक्रमण।
वैनयिक अरु कृति कर्मशुभ, दशवैकालिक परम शरण।। 26।।
उत्तराध्यन भी रहा श्रेष्ठ शुभ, कल्पव्यवहार को करूँ नमन्।
कल्पाकल्प अरु महाकल्पशुभ, पुण्डरीक को शत् वन्दन।। 27।।
महापुण्डरीक और निषधिका, वस्तु तत्व का करे कथन।
अंग बाह्य के कहे प्रकीर्णक, श्रुत परिपाटी को वन्दन।। 28।।
अवधिज्ञान प्रत्यक्ष भेदयुत, द्रव्यादि मर्यादा वान।
देशावधि परमावधि पावन, वन्दू सर्वावधि महान्।। 29।।
पर के मन में स्थित रूपी, द्रव्य जानते जो गुणवान।
ऋजु विपुल मति भेद रूप शुभ, वन्दूं मैं मनः पर्यय ज्ञान।। 30।।
तीन काल के द्रव्य जो युगपत, जानें सर्व सुखों की खान।
एक रहा क्षायिक अनन्त शुभ, वन्दूं मैं वह केवलज्ञान।। 31।।
तीन लोक के नेत्र स्वरूपी, मति ज्ञान आदिक ध्याऊँ।
शीघ्र ज्ञान ऋद्धि अरु फल मैं, अविनाशी सुख को पाऊँ।। 32।।

दोहा- होता सम्यक् ज्ञान से, मुक्ती ज्ञान प्रकाश।
'विशद' ज्ञान पा जीव यह, पाए मोक्ष निवास।।

ॐ ह्रीं श्री मानसावग्रहादि केवलज्ञानान्त्य-अष्टपंचाशदुत्तरशत प्रमाणज्ञानेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- किए ज्ञान की अर्चना, बढ़े ज्ञान का कोष।
श्रुतालोक में जीव का, हो जीवन निर्दोष।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2540 विक्रम सम्वत् 2070 मासोत्तम मासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे दशमी सोमवासरे रेवाड़ी नामनगरे जैनपुरी स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनालय (कुआँ वाला) मध्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातस्तत् शिष्य श्री विमलसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्या श्री विरागसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः विशदसागराचार्येण श्री सम्यक् ज्ञान विधान रच्यते इति शुभं भूयात्।

जिनवाणी की आरती

(तर्ज-हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती...)

आज करें हम जिनवाणी की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, हे माँ तेरे द्वार ।।
हो माता हम सब उतारे तेरी आरती...
तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकारमय प्यारी।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जन-जन की मनहारी।।1।। हो माता...
मिथ्या मोह नशानेवाली, है जिनवाणी माता।
ध्याने वाले जग जीवों को, देने वाली साता।।2।। हो माता...
गणधर द्वारा झेली जाती, तीर्थंकर की वाणी।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाली, सर्व जगत कल्याणी।।3।। हो माता...
जो जिनवाणी माँ को ध्याते, वे सुख शांति पाते।
पूजा अर्चा करने वाले, केवल ज्ञान जगाते।।4।। हो माता...
महिमा सुनकर के हे माता, द्वार आपके आये।
'विशद' भाव से आरती करके, सादर शीश झुकाए।।5।। हो माता...
सुख शांति सौभाग्य बढ़ाकर, मुक्ती राह दिखाओ।
देकर के आशीष हे माता, शिवपुर में पहुँचाओ।।6।। हो माता...

श्री सरस्वती (जिनवाणी) चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, जिनश्रुत कहा अनन्त।।
दिव्य ध्वनि जिनदेव की, सरस्वती है नाम।
चालीसा लिखते यहाँ, करके विशद प्रणाम।

(चौपाई)

जय–जय सरस्वती जिनवाणी, तुम हो जन–जन की कल्याणी।
प्रथम भारती नाम कहाया, द्वितिय सरस्वती शुभ गाया।।
तृतिय नाम शारदा जानो, चौथा हंसगामिनी मानो।
पञ्चम विदुषां माता गाई, वागीश्वरि छठवाँ शुभ पाई।।
सप्तम नाम कुमारी गाया, अष्टम ब्रह्मचारिणी पाया।
जगत माता नौमी शुभ जानो, दशम नाम ब्राह्मिणि पहिचानो।।
ब्रह्माणी ग्यारहवाँ भाई, बारहवाँ वरदा सुखदायी।
नाम तेरहवाँ वाणी गाया, चौदहवाँ भाषा कहलाया।।
पन्द्रहवाँ श्रुतदेवी माता, सोलहवाँ गौरी दे साता।
सोलह नाम युक्त जिनमाता, सबके मन की हरे असाता।।
द्वादशांग युत वाणी गाई, चौदह पूर्व युक्त बतलाई।
आचारांग प्रथम कहलाया, दूजा सूत्र कृतांग बताया।।
स्थानांग तीसरा जानो, चौथा समवायांग बखानो।
व्याख्या प्रज्ञप्ति है पंचम, श्रातृकथा शुभ अंग है षष्ठम।।
उपाशकाध्ययन अंग सातवाँ, अन्तःकृद्दश रहा आठवाँ।
नवम् अनुत्तर दशांग बताया, दशम प्रश्न व्याकरण कहाया।।
सूत्र विपांग ग्यारहवाँ जानो, दृष्टिवाद बारहवाँ मानो।
पाँच भेद इसके बतलाए, पहला शुभ परिकर्म कहाए।।
सूत्र दूसरा भेद बखाना, भेद पूर्वगत तृतिय माना।
चौथा प्रथमानुयोग कहाया, पंचम भेद चूलिका गाया।।
भेद पूर्वगत के शुभकारी, चौदह होते मंगलकारी।
पहला उत्पाद पूर्व बखाना, पूर्व अग्राणीय द्वितिय माना।।

तीजा वीर्य प्रवाद कहाया, अस्तिनास्ति प्रवाद फिर गाया।
पंचम ज्ञान प्रवाद बखाना, सत्य प्रवाद छठा शुभ माना।।
सप्तम आत्म प्रवाद है भाई, कर्म प्रवाद अष्टम सुखदायी।
नौवा प्रत्याख्यान बताया, विद्यानुवाद दशम कहलाया।।
कल्याणवाद ग्यारहवाँ जानो, प्राणावाय बारहवाँ मानो।
क्रिया विशाल तेरहवाँ भाई, लोक बिन्दुसार अन्तिम गाई।।
ऋषभादिक चौबिस जिन गाये, वीर प्रभु अन्तिम कहलाए।
ॐकारमय श्री जिनवाणी, तीन लोक में है कल्याणी।।
गौतम गणधर ने उच्चारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
तीन हुए अनुबद्ध केवली, पाँच हुए फिर श्रुत केवली।।
फिर आचार्यों ने वह पाई, परम्परा यह चलती आई।
कलीकाल पञ्चम युग आया, अंग पूर्व का ज्ञान भुलाया।।
ज्ञाता आगांश के शुभ भाई, धरसेन स्वामी बने सहाई।
भूतबली पुष्पदन्त बुलाए, षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखाए।।
धवलादिक टीका शुभकारी, श्रुत का साधन बना हमारी।
शुभ अनुयोग चार बतलाए, चतुर्गति से मुक्ति दिलाए।।
प्रथमानुयोग प्रथम कहलाया, द्वितिय करुणानुयोग बताया।
चरणानुयोग तीसरा जानो, द्रव्यानुयोग चौथा पहिचानो।।
अनेकांतमय अमृतवाणी, स्याद्वाद मय श्री जिनवाणी।
जिसमें हम अवगाहन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ।।
सम्यक् श्रुत पा ध्यान लगाएँ, अनुपम केवलज्ञान जगाए।
'विशद' भावना है यह मेरी, मिट जाये भव–भव की फेरी।।

दोहा– श्रद्धा भक्ती से पढ़े, चालीसा शुभकार।
लौकिक आध्यात्मिक सभी, पावे ज्ञान अपार।।
पच्चिस सौ सैंतीस यह, कहा वीर निर्वाण।
'विशद' भाव से यह किया, आगम का गुणगान।।

जाप– ॐ ह्रीं श्रां श्रूं श्रः हं सं थः थः ठः ठः ठः सरस्वती भगवति विद्या प्रसादं कुरु–कुरु स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 120 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्त्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्त्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट्खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ति संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिन्दगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ति के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ति पीयूष
153. विशद मुक्तावली
154. संगीत प्रसून
155. आरती चालीसा संग्रह
156. भक्तामर भावना
157. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
158. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
159. विशद महा अर्चना संग्रह
160. विशद जिनवाणी संग्रह
161. विशद वीतरागी संत
162. काव्य पुञ्ज
163. पञ्च जाप्य
164. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
165. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
166. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर